विंध्यागिरि की डिलीवरी: प्रोजेक्ट 17A की सातों फ्रिगेट नौसेना के हवाले

समाचार-संदर्भ: 27 नवंबर 2026

प्रकाशन: 28 नवंबर 2026

प्रिलिम्स: रक्षा, प्रोजेक्ट 17A, स्वदेशी पोत-निर्माण



मौलिक प्रतीकात्मक चित्र: pcsmantra.com

▼ इस लेख में

1. खबरों में क्यों
2. मुख्य तथ्य
3. नाम और विरासत
4. तकनीकी विशेषताएँ
5. परीक्षा की दृष्टि से विश्लेषण
6. आगे की राह
7. प्रिलिम्स परीक्षा अभ्यास प्रश्न
8. स्रोत:
9. अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न

खबरों में क्यों

प्रोजेक्ट 17A की सातवीं और अंतिम फ्रिगेट विंध्यागिरि (यार्ड 3024) 27 नवंबर 2026 को गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजिनियर्स लिमिटेड (GRSE), कोलकाता में भारतीय नौसेना को सौंपी गई। इसी के साथ प्रोजेक्ट 17A के तहत सातों फ्रिगेट की डिलीवरी पूरी हो गई। [1]

मुख्य तथ्य

मूल बात समझिए: फ्रिगेट (frigate) मध्यम आकार का युद्धपोत होता है, जो हवा, समुद्री सतह और पानी के नीचे, तीनों ओर से आने वाले खतरों से निपटने के लिए बनाया जाता है।

कौन-सी नीलगिरि श्रेणी: प्रोजेक्ट 17A के तहत बनी सात उन्नत स्टील्थ फ्रिगेट को नीलगिरि श्रेणी कहा जाता है। इसकी पहली फ्रिगेट INS नीलगिरि 20 दिसंबर 2024 को नौसेना को मिली थी। सातों पोत महज 23 महीनों के भीतर डिलीवर हो गए। [1] [3]

किसने बनाया: नीलगिरि श्रेणी की सात फ्रिगेट हैं: नीलगिरि, हिमगिरि, उदयगिरि, दूनागिरि, तारागिरि, विंध्यागिरि और महेन्द्रगिरि। इनमें से चार माजगाँव डॉक शिपबिल्डर्स (मुंबई) और तीन GRSE (कोलकाता) ने बनाई हैं। विंध्यागिरि GRSE द्वारा निर्मित तीसरी फ्रिगेट है। [1] [2]

डिज़ाइन: इन पोतों का डिज़ाइन नौसेना के अपने वॉरशिप डिज़ाइन ब्यूरो (WDB) ने तैयार किया है, जबकि निर्माण की निगरानी वॉरशिप ओवरसीइंग टीम (कोलकाता) ने की।

तेज निर्माण: पहले पोत (INS नीलगिरि) को बनने में 84 महीने लगे, जबकि अनुभव के साथ विंध्यागिरि का निर्माण-काल घटकर 68 महीने रह गया। [1]

स्वदेशीकरण: परियोजना में 75% स्वदेशी सामग्री है। इसमें 200 से अधिक लघु, लघु और मध्यम उद्यम (MSME) जुड़े और लगभग 4,000 लोगों को प्रत्यक्ष तथा 10,000 से अधिक लोगों को अप्रत्यक्ष रोजगार मिला। [1]

नाम और विरासत

यह पोत कर्नाटक की विंध्यागिरि पर्वतमाला के नाम पर है। यह पुराने INS विंध्यागिरि का नवावतार है, जो लिएंडर श्रेणी की फ्रिगेट थी और 8 जुलाई 1981 से 11 जून 2012 तक, यानी 31 वर्षों तक नौसेना में सेवा दे चुकी है। [1]

विंध्यागिरि का जलावतरण (launch) 17 अगस्त 2023 को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने GRSE में हुगली नदी में किया था। जलावतरण का अर्थ है पोत का पहली बार पानी में उतरना; डिलीवरी का अर्थ है शिपयार्ड द्वारा पोत नौसेना को सौंपना। [2]

तकनीकी विशेषताएँ

प्रणोदन प्रणाली: पोत में CODOG (Combined Diesel or Gas) प्रणोदन है। इसमें डीज़ल इंजन और गैस टरबाइन दोनों होते हैं; सामान्य गति पर डीज़ल और तेज रफ्तार की ज़रूरत पर गैस टरबाइन काम करता है। हर शाफ्ट पर कंट्रोलेबल पिच प्रोपेलर (CPP) लगा है, जिससे बिना दिशा बदले गति और पलटाव नियंत्रित होता है।

IPMS: इंटीग्रेटेड प्लेटफॉर्म मैनेजमेंट सिस्टम पोत की मशीनरी की स्वचालित निगरानी और नियंत्रण करता है, जिससे चालक दल का बोझ घटता है।

हथियार और सेंसर: पहले की प्रोजेक्ट 17 (शिवालिक श्रेणी) की तुलना में इनमें अधिक उन्नत हथियार और सेंसर हैं। पोत सतह-विरोधी (anti-surface), वायु-विरोधी (anti-air) और पनडुब्बी-विरोधी (anti-submarine), तीनों तरह के अभियान चला सकती है। [1]

परीक्षा की दृष्टि से विश्लेषण

आत्मनिर्भरता का पैमाना: डिज़ाइन, निर्माण और 75% स्वदेशी सामग्री, तीनों घरेलू हैं। यह रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भर भारत की दिशा का ठोस उदाहरण है, जहाँ MSME और रोजगार भी जुड़ते हैं।

डिलीवरी की रफ्तार: सात उन्नत फ्रिगेट केवल 23 महीनों में मिलना भारतीय शिपयार्डों की परिपक्वता दिखाता है। निर्माण-काल का 84 महीनों से घटकर 68 महीने होना सीखने की प्रक्रिया को दर्शाता है।

सीमा: डिलीवरी के बाद पोत को कमीशन (सक्रिय सेवा में शामिल) होना बाकी है। कमीशनिंग के बाद ही इसे INS विंध्यागिरि कहा जाएगा और परिचालन तैनाती मिलेगी। इसलिए डिलीवरी और कमीशनिंग में अंतर परीक्षा की दृष्टि से ध्यान रखें।

आगे की राह

विंध्यागिरि की कमीशनिंग और परिचालन तैनाती अगला कदम होगी। आगे की चुनौती स्वदेशी सेंसर और हथियार प्रणालियों की हिस्सेदारी बढ़ाना और नई पीढ़ी के पोतों के निर्माण में समय और लागत और घटाना होगी।

PCSMANTRA.COM

प्रिलिम्स परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. प्रोजेक्ट 17A के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन 1: इसके तहत बनी सातों फ्रिगेट नीलगिरि श्रेणी की हैं।

कथन 2: विंध्यागिरि इस श्रेणी की अंतिम फ्रिगेट है, जिसका निर्माण GRSE, कोलकाता ने किया है।

कथन 3: इस श्रेणी के पहले पोत की डिलीवरी से सातवें पोत की डिलीवरी तक का समय 23 महीने रहा।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 2 और 3

(c) केवल 1 और 3

(d) 1, 2 और 3

▼ उत्तर और व्याख्या

उत्तर: (d)

कथन 1 सही है, प्रोजेक्ट 17A की सातों फ्रिगेट नीलगिरि श्रेणी की हैं।

कथन 2 सही है, विंध्यागिरि सातवीं और अंतिम फ्रिगेट है, जो GRSE द्वारा निर्मित इस श्रेणी की तीसरी फ्रिगेट है।

कथन 3 सही है, INS नीलगिरि की डिलीवरी (20 दिसंबर 2024) से विंध्यागिरि की डिलीवरी (27 नवंबर 2026) तक का काल 23 महीने रहा।

PCSMANTRA.COM

प्रश्न 2. विंध्यागिरि फ्रिगेट का नाम किस पर रखा गया है?

(a) पश्चिमी घाट की नीलगिरि पर्वतमाला

(b) कर्नाटक की विंध्यागिरि पर्वतमाला

(c) उत्तराखंड की दून घाटी

(d) जम्मू-कश्मीर की पीर पंजाल शृंखला

▼ उत्तर और व्याख्या

उत्तर: (b)

पोत का नाम कर्नाटक की विंध्यागिरि पर्वतमाला के नाम पर है। यह लिएंडर श्रेणी की पुरानी फ्रिगेट INS विंध्यागिरि (1981-2012) का नवावतार भी है।

स्रोत:

- [1] https://www.pib.gov.in/PressReleseDetailm.aspx?PRID=2342700&lang=1&reg=3
- [2] https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1949974&lang=1&reg=3
- [3] https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2086668

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न

विंध्यागिरि क्या है?

यह प्रोजेक्ट 17A (नीलगिरि श्रेणी) की सातवीं और अंतिम उन्नत स्टील्थ फ्रिगेट है, जिसे 27 नवंबर 2026 को GRSE, कोलकाता में भारतीय नौसेना को सौंपा गया।

प्रोजेक्ट 17A के तहत कितने पोत बने और कौन बनाता है?

कुल सात फ्रिगेट बनीं। चार माजगाँव डॉक शिपबिल्डर्स (मुंबई) और तीन GRSE (कोलकाता) ने बनाईं। डिज़ाइन नौसेना के वॉरशिप डिज़ाइन ब्यूरो का है।

डिलीवरी और कमीशनिंग में क्या अंतर है?

डिलीवरी में शिपयार्ड तैयार पोत नौसेना को सौंपता है। कमीशनिंग औपचारिक समारोह है, जिसके बाद पोत INS उपनाम के साथ सक्रिय सेवा में आता है।

इस परियोजना से रोजगार और उद्योग को क्या लाभ हुआ?

लगभग 4,000 प्रत्यक्ष और 10,000 से अधिक अप्रत्यक्ष रोजगार बने और 200 से अधिक MSME जुड़े; स्वदेशी सामग्री की हिस्सेदारी 75% रही।

PCSMANTRA.COM